Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

भारत में जनसंख्या शिक्षा: जनसांख्यिकीय संक्रमण के बदलते संदर्भ में पुनर्संरचना की आवश्यकता

निखिलेश शर्मा

Assistant Professor, Department of Geography, Govt. Girls College, Anoopgarh, Sri Ganganagar, Rajasthan, India

Corresponding Author: * निखिलेश शर्मा

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19811063

सारांश

भारत वर्तमान में जनसांख्यिकीय संक्रमण के अंतिम विस्तार चरण में है, तथा धीरे-धीरे जनसंख्या स्थिरीकरण की ओर अग्रसर हो रहा है। इस संक्रमण काल में जनसंख्या शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। प्रारंभिक चरण में जनसंख्या शिक्षा का उद्देश्य जनसंख्या विस्फोट तथा उसके सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय प्रभावों के प्रति जागरूकता विकसित करना था, किंतु वर्तमान समय में भारत के समक्ष उभर रही जनसांख्यिकीय चुनौतियाँ भिन्न स्वरूप धारण कर चुकी हैं। भारत में कुल प्रजनन दर प्रतिस्थापन स्तर से नीचे आ चुकी है, वृद्ध होती जनसंख्या का अनुपात बढ़ रहा है, विवाह की औसत आयु में परिवर्तन हो रहा है तथा संतान प्राप्ति की इच्छा में गिरावट देखी जा रही है। इसके अतिरिक्त महिलाओं की आर्थिक भागीदारी और उच्च शिक्षा में नामांकन की दर भी चिंता का विषय बनी हुई है। प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य इन नवीन जनसांख्यिकीय परिवर्तनों के आलोक में जनसंख्या शिक्षा के उद्देश्यों एवं पाठ्यक्रम की पुनर्संरचना की आवश्यकता को रेखांकित करना है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 01-01-2026
- **Accepted:** 24-04-2026
- **Published:** 27-04-2026
- **MRR:**4(SP1); 2026: 152-154
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

शर्मा न. भारत में जनसंख्या शिक्षा: जनसांख्यिकीय संक्रमण के बदलते संदर्भ में पुनर्संरचना की आवश्यकता. Indian J Mod Res Rev. 2026;4(SP1):152-154.

Access this Article Online

www.mrrjournal.in

मुख्य शब्द: जनसंख्या शिक्षा, कुल प्रजनन दर, वृद्ध होती जनसंख्या, जनसांख्यिकीय संक्रमण, जनसांख्यिकीय लाभांश, महिलाओं का आर्थिक समावेशन।

© 2026 निखिलेश शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

संयुक्त राष्ट्र के आर्थिक एवं सामाजिक मामलों के विभाग (2023) के अनुसार अप्रैल 2023 में भारत की जनसंख्या 1.42 अरब से अधिक हो चुकी है, जिससे भारत विश्व का सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश बन गया है। यद्यपि यह आँकड़ा प्रथम दृष्टया चिंताजनक प्रतीत होता है, किंतु इसे केवल जनसंख्या आकार के परिप्रेक्ष्य में देखना पर्याप्त नहीं है। ब्लैकर (1947) ने जनसांख्यिकीय संक्रमण की पाँच अवस्थाओं—

a. उच्च स्थिर
b. प्रारंभिक विस्तार
c. अंतिम विस्तार
d. निम्न स्थिर
e. ह्रास अवस्था का उल्लेख किया है।

ब्लैकर द्वारा प्रतिपादित जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत के अनुसार भारत वर्तमान में अंतिम विस्तार अवस्था में प्रवेश कर चुका है, जहाँ जन्म दर एवं मृत्यु दर दोनों में गिरावट के कारण जनसंख्या वृद्धि की गति धीमी हो रही है।

2. जनसंख्या शिक्षा की अवधारणा एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

जनसंख्या शिक्षा का उद्भव बीसवीं शताब्दी के मध्य में यूरोप एवं अमेरिका में जनसंख्या विस्फोट की समस्या के प्रत्युत्तर में हुआ। एल्वा मिर्डाल (1941) ने शिक्षा में जनसंख्या अध्ययन की आवश्यकता पर बल दिया, जबकि हाउज़र (1962) ने 'जनसंख्या शिक्षा' शब्द का प्रयोग किया तथा इसे औपचारिक पहचान प्रदान की। भारत में स्वतंत्रता के पश्चात विशेषकर 1961 से 1991 के बीच तीव्र जनसंख्या वृद्धि के कारण जनसंख्या शिक्षा को विशेष महत्व प्राप्त हुआ। इस दिशा में एनसीईआरटी द्वारा पाठ्यक्रम निर्माण, राष्ट्रीय जनसंख्या नीति (1976, 2000), राष्ट्रीय परिवार कल्याण कार्यक्रम तथा विभिन्न राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय सेमिनारों और कार्यशालाओं ने जनसंख्या शिक्षा के संस्थानीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

3. भारत में उभरते जनसांख्यिकीय परिवर्तन

3.1 कुल प्रजनन दर में गिरावट

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5,2019–20) के अनुसार भारत की कुल प्रजनन दर घटकर 2.0 तक आ चुकी है, जो प्रतिस्थापन स्तर (2.1) से कम है। यह प्रवृत्ति भविष्य में जनसंख्या संकुचन की ओर संकेत करती है। भारत में यदि यही प्रवृत्ति बनी रहती है, तो आगामी दशकों में भारत को श्रमबल की कमी वृद्ध निर्भरता अनुपात में वृद्धि तथा आर्थिक विकास की गति में मंदी जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

3.2 वृद्ध होती जनसंख्या

नमूना पंजीकरण प्रणाली (SRS-2020) के अनुसार भारत में 60 वर्ष से अधिक आयु की जनसंख्या का अनुपात निरंतर बढ़ रहा है, जिससे सामाजिक सुरक्षा एवं पारिवारिक संरचना पर दबाव बढ़ रहा है। परंपरागत संयुक्त परिवार व्यवस्था के कमजोर होने के कारण वृद्धजनों की देखभाल एक गंभीर सामाजिक समस्या के रूप में उभर रही है।

3.3 विवाह की औसत आयु एवं संतान प्राप्ति की इच्छा

विवाह की औसत आयु में वृद्धि तथा एकल अथवा शून्य संतान की प्रवृत्ति दीर्घकालिक जनसांख्यिकीय असंतुलन का संकेत देती है। आधुनिक समय में, लोग करियर और व्यक्तिगत लक्ष्यों के कारण विवाह और बच्चे पैदा करने में देरी कर रहे हैं, जिससे विवाह की औसत आयु बढ़ रही है और संतान प्राप्ति भी देर से हो रही है, भारत में विवाह की औसत आयु में वृद्धि हुई है, विशेषकर महिलाओं में, जो पहले 18 वर्ष से कम उम्र में होती थी, अब 20-24 वर्ष की आयु सीमा में अधिक देखी जाती है, खासकर उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं में यह स्थिति भविष्य में जनसंख्या संरचना को प्रभावित कर सकती है।

4. महिलाओं का आर्थिक समावेशन एवं शिक्षा

विश्व आर्थिक मंच (2021) की रिपोर्ट के अनुसार भारत में महिलाओं की आर्थिक भागीदारी अत्यंत निम्न है। आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS, 2020) दर्शाता है कि कार्यशील आयु वर्ग की केवल 18.6 प्रतिशत महिलाएँ ही श्रम बल में भाग ले रही हैं। इसके साथ ही उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात भी विकसित देशों की तुलना में काफी कम है। ये दोनों कारक जनसांख्यिकीय लाभांश के पूर्ण उपयोग में बाधक हैं।

5. जनसंख्या शिक्षा की पुनर्संरचना की आवश्यकता

वर्तमान जनसंख्या शिक्षा पाठ्यक्रम मुख्यतः जनसंख्या नियंत्रण पर केंद्रित हैं। बदलते जनसांख्यिकीय संदर्भ में अब आवश्यक है कि जनसंख्या शिक्षा में कुल प्रजनन दर में गिरावट, वृद्धावस्था, लैंगिक समानता, शहरीकरण एवं मानव संसाधन विकास जैसे विषयों को प्रमुखता दी जाए,जनसंख्या शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए।

6. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोधपत्र से यह स्पष्ट होता है कि भारत में जनसंख्या शिक्षा के पारंपरिक दृष्टिकोण में परिवर्तन की आवश्यकता है। केवल जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण के स्थान पर अब जनसंख्या की गुणवत्ता, संरचना एवं दीर्घकालिक सामाजिक-आर्थिक प्रभावों पर केंद्रित जनसंख्या शिक्षा की आवश्यकता है। इससे भारत न केवल जनसांख्यिकीय संक्रमण की चुनौतियों का सामना कर सकेगा, बल्कि जनसांख्यिकीय लाभांश का भी प्रभावी उपयोग कर सकेगा। इस प्रकार पुनर्संरचित जनसंख्या शिक्षा भारत को जनसांख्यिकीय संक्रमण की चुनौतियों का सामना करने में सहायता प्रदान कर सकती है तथा जनसांख्यिकीय लाभांश के प्रभावी उपयोग का मार्ग प्रशस्त कर सकती है।

संदर्भ सूची

1. ब्लैकर सीपी. Stages of population growth. Eugenics Review. 1947;39(3):88–101.
2. चंदेल एनपीएस, नंद वीके. जनसंख्या शिक्षा. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर; 2003.
3. मिर्डाल ए. Nation and family. लंदन: Kegan Paul; 1941.
4. हाउज़र पीएम. Population gaps in the curriculum. Teachers College Record. 1962;63:425.

© 2026 निखिलेश शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

5. भारत सरकार. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली: भारत सरकार; 2020.
6. भारत सरकार. राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5) 2019–20. नई दिल्ली: भारत सरकार.
7. विश्व आर्थिक मंच. Global gender gap report. जिनेवा: विश्व आर्थिक मंच; 2021.
8. संयुक्त राष्ट्र. UN DESA policy brief no. 153. संयुक्त राष्ट्र; 2023.

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

Disclaimer: The views, opinions, statements, and conclusions expressed in the papers, abstracts, presentations, and other scholarly contributions included in this conference are solely those of the respective authors. The organisers and publisher shall not be held responsible for any loss, harm, damage, or consequences — direct or indirect — arising from the use, application, or interpretation of any information, data, or findings published or presented in this conference. All responsibility for the originality, authenticity, ethical compliance, and correctness of the content lies entirely with the respective authors.

© 2026 निखिलेश शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/